डॉ० प्रदीप कुमार राव का जन्म 1 मई 1970 को देवरिया जनपद के नगवाँ गाँव में हुआ। आपकी सम्पूर्ण शिक्षा–दीक्षा श्रीगोरक्ष भूमि पर सम्पन्न हुई। आपका अध्यापन अनुभव 27 वर्ष का है तथा आपने 12 पुस्तकों का लेखन एवं 9 पुस्तकों का सम्पादन किया है। डॉ0 राव ने 14 से अधिक राष्ट्रीय संगोष्ठियों का संयोजन तथा 27 से अधिक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों की अध्यक्षता किया है साथ ही आपके 45 से अधिक शोध–पत्रों का प्रकाशन हुआ है। सन् 2007 से विमर्श (वार्षिकी), सन् 2009 से मानविकी (अर्द्ध वार्षिकी) तथा सन् 2010 से शोध संचयन (अर्द्ध वार्षिकी) जैसे ख्यातिलब्ध शोध पत्रिकाओं का सम्पादन करते आ रहे हैं।

डॉ0 राव 7 संस्थाओं के संस्थापक हैं तथा विभिन्न संस्थाओं में सदस्य नामित हैं जिनमें सदस्य, कार्यकारिणी, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ; सदस्य, साधारण सभा, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ; सदस्य, अधिशासी समिति, महायोगी गोरक्षनाथ शोधपीठ, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर; सदस्य कार्यपरिषद्, दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर आदि प्रमुख हैं। आप 2005 से महाराणा प्रताप पी.जी. कालेज, जंगल धूसड़, गोरखपुर के संस्थापक प्राचार्य हैं।

सम्प्रति आप कुलसचिव, महायोगी गोरखनाथ विश्वविद्यालय, आरोग्यधाम, गोरखपुर में अपनी सेवा दे रहे हैं।

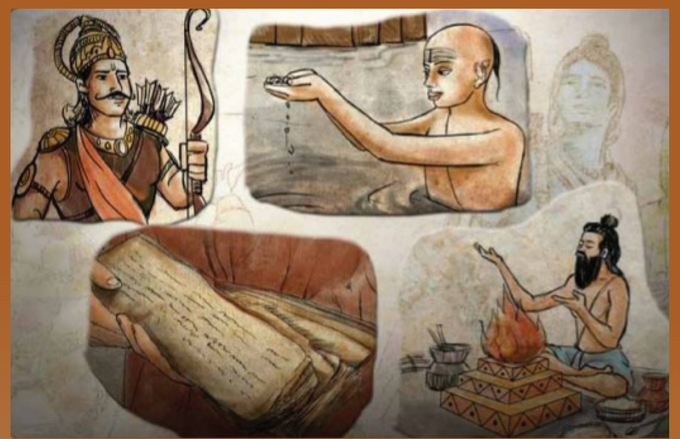

प्राचीन भारत में राजकर्मचारी (वैदिक काल से गुप्त काल तक)

प्रदीप कुमार राव

स्वाति पब्लिकेशन्स

34, सैन्ट्रल मार्केट, अशोक विहार
दिल्ली–110 052
फोन: 91–11–27212195, 43513480
फैक्स: 91–11–27212195
ई–मेल: swatipublications7@gmail.com, agamkala101@gmail.com
www.agamkala.com

ISBN: 978-93-81843-37-6
₹ 1100/-

प्राचीन भारत में राजकर्मचारी

(वैदिक काल से गुप्त काल तक)

डॉ. प्रदीप कुमार राव

प्राचीन भारत में कोष एवं सेना ही राज्य की सम्प्रभुता के आधार थे। वास्तव में राजस्व व्यवस्था के विकास के साथ ही राजकर्मचारियों का आवश्यकता जनित कारणों से विकास सम्भव हुआ। लौह प्रविधि, लेखन कला के विकास, उत्पादन के संसाधनों में तकनीकी प्रगति एवं मौद्रिक विकास के कारण राज्य एवं समाज दोनों में जटिलता आयी। परिणामस्वरूप अकेले राजा एवं उनके सजातों द्वारा राजकीय कार्यों का सम्पादन सम्भव नहीं था। राजकीय कार्यों के सुगम संचालन हेतु राजकर्मचारियों का विकास हुआ। समय सन्दर्भों के अनुरूप राजकर्मचारियों के चरित्र एवं उनके कार्यों में परिवर्तन हुआ। आधुनिक राजकर्मचारियों की भाँति प्राचीन भारत में भी राजकर्मचारियों में दोष थे, जिन पर प्रभावी नियन्त्रण स्थापित करने के उपाय राज्यशास्त्रियों ने सुझाये। आधुनिक अधिकारियों के सेवा संवर्ग के अनुरूप प्राचीन भारत में भी सेवा संवर्ग बने। अनेकशः राजकर्मचारियों के सेवा संवर्ग सामाजिक वर्गों में रूपान्तिरत भी हुये।

प्रस्तुत ग्रन्थ में वैदिक काल से लेकर गुप्तकाल तक राज्य एवं राजकर्मचारियों के विकास तथा उनके चरित्रगत परिवर्तनों को सामाजार्थिक परिप्रेक्ष्य में निरूपित किया गया है।

ISBN: 978-93-81843-37-6

₹ 1100/-